६ द्रव्यप्रमाणानुगम

१ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

षट्खंडागमके प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कराया गया है, अर्थात् यह, यह बतलाया गया है कि समस्त जीवराशी कितनी है, तथा उसमें भिन्न भिन्न गुणस्थानों व मार्गणास्थानोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावत: प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषयका वर्णन आचार्योंने किस आधारपर किया है? यह तो पूर्वभागोंमें बता ही आये हैं कि षट्खण्डागमका बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर भगवान् की द्वादशांगवाणीके अंगभूत चौदह पूर्वोमेंसे द्वितीय आग्रायणीय पूर्वके कर्मप्रकृति नामक एक अधिकार-विशेषमेंसे लिया गया है। उसमेंसे भी द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है--

कर्मप्रकृतिपाहुड, अपरनाम वेदनाकृत्स्नपाहुड (वेयणकसिणपाहुड) के कृति, वेदना आदि चौवीस अधिकारोंमें छठवां अधिकार 'बंधन' है, जिसमें बंधका वर्णन किया गया है। इस बंधन के चार अर्थाधिकार हैं - बंध, बंधक, बंधनीय और बंधविधान। इनमेंसे बंधक नामक द्वितीय अधिकारके एकजीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एकजीवकी अपेक्षा काल आदि ग्यारह अनुयोगद्वार हैं। इन ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें से पांचवा अनुयोगद्वार द्रव्यप्रमाण नामका है और वहींसे प्रकृत द्रव्यप्रमाणानुगम लिया गया है। (षट्खंडागम, प्रथम भाग, पृ. १२५-१२६)

यहाँ प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब जीवट्ठाणकी सत्, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और अल्पबहुत्व ये छह प्ररूपणायें बंधविधानके प्रकृतिस्थानबंध नामक अवान्तर अधिकारके आठ अनुयोगद्वारोंमेंसे ली गई हैं, तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी वहींसे क्यों नहीं लिया, क्योंकि, वहाँ भी तो यह अनुयोगद्वार यथास्थान पाया जाता था ? इसका उत्तर यह दिया गया है कि प्रकृतिस्थानबंधके द्रव्यानुयोगद्वारमें 'इस बंधस्थानके बंधक जीव इतने हैं' ऐसा केवल सामान्य रूपसे कथन किया गया है; किन्तु मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन नहीं किया गया। बंधक अधिकारमें गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन किया गया है, वहां बतलाया गया है कि मिथ्यादृष्टि

जीव इतने होते हैं, सासादनसम्यग्दृष्टि जीव इतने हैं; इत्यादि । अतएव जीवट्ठाणमें द्रव्यप्रमाणानुगमके लिये बंधक अधिकारका यही द्रव्यप्रमाणानुगम उपयोगी सिध्द हुआ।

(देखो षट्खंडागम प्रथम भाग, पृ. १२९)